P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मोक्ष संबंधी दार्शनिक चिन्तन और पं० लखमीचन्द का सांग साहित्य

कविता
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
एस०आर०एम० विश्वविद्यालय,
सोनीपत

सारांश

भारतीय दर्शन विश्व का प्रमुख मार्गदर्शक रहा है। वैदिक साहित्य में भी भारतीय विचारकों ने दर्शन पर काफी कुछ लिखा है। इनके विचारों का सार यही है कि दर्शन ही समस्त धर्मों का आधार है। इस तरह हम कह सकते हैं कि यह हमारी संस्कृति से गहरे रूप से जुड़ा है। दर्शन का मुख्य लक्ष्य आध्यात्मिक चेतना को विस्तार देना है। दर्शन के द्वारा ही व्यक्ति अपनी आत्मा की गुंज को पहचान पाता है। इस आत्मा की गूंज को पहचानने वाला ही संसार को सही राह पर ला सकता है। जीव की परीक्षा लेने के लिए ब्रह्म ने इस संसार की सृजना की है। जो जीव इस परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाता है। वह मोक्ष का अधिकारी बन जाता है। डॉ० धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार, ''दृश्य जगत् के साथ–साथ आत्मा के सम्बन्ध का विनाश ही मोक्ष है। वेदान्त में आत्मैक्य को मुक्ति माना गया है। ज्ञान उत्पन्न होते ही सद्यः आनन्द उत्पन्न होता है और प्रपंच का विलय हो जाता है। प्रपंच–विलय ही वेदान्त की मुक्तावस्था है। ..... संसार का यह प्रपंच अविद्या निर्मित और मिथ्या है। ब्रह्म ज्ञान होने से अविद्या का नाश हो जाता है और जगत की सत्ता नहीं रहती।''

मुख्य शब्द : सांग, दार्शनिक चिन्तन, रागनी, मनोविकार, सादगी, भोग–विलास।

प्रस्तावना

यह मोक्ष का मार्ग पं० लखमीचन्द ने अपने सांगों के माध्यम से बताया है। सांग 'पूर्णमल' में कवि पूर्णमल के माध्यम से कहता है कि जीवन का लक्ष्य भोग–विलास नहीं, बल्कि इन विकारों से ऊपर उठकर मोक्ष प्राप्त करना है। भक्ति के द्वारा ही जीव परम–पद रूपी मोक्ष पा सकता है। यथा–

उठो उठो हे सखी, लगो हरी के भजन मैं।। टेक।।
जिन नै हर की माला टेरी, उन बन्द्यां नै मोक्ष भतेरी।
दोनूं बखतां श्याम–सबेरी, एक बार दिन मैं।।
भक्ति चीज जगत मैं किसी, इसकी जोत चमकती इसी।
जैसे सप्त ऋषि रहे चमक गगन मैं।।
सखी भक्ति का ढंग निराला, कहैं उन बन्द्यां का मुंह काला।
जिनके हाथ के मैं माला, और पाप रहै मन मैं।।
हे सखी डूब गई पढ़ गुण कै, फेर तूं रोवैगी सिर धुण कै।
लखमीचन्द साज नै सुण कै, उठैं लोर सी बदन मैं।।[1]

अर्थात् भक्ति ही मुक्ति का मार्ग है, लेकिन इसमें पाखण्ड और पाप समाहित नहीं होने चाहिए। पं० लखमीचन्द ने ब्रह्म, जगत, माया की तरह मोक्ष की भी शास्त्रीय व्याख्या नहीं की है। यह उनके सांगों का लक्ष्य भी नहीं था। लखमीचन्द कोई दार्शनिक नहीं थे और न ही उन्होंने स्वयं को दार्शनिक माना है। उनका प्रमुख लक्ष्य पापों से मानव जाति को बचाना था। विवेच्य सांगी की दृष्टि में मोक्ष को प्राप्त करना कठिन तो है, लेकिन असंभव नहीं। उनके अनुसार जब परमात्मा, जीवात्मा, सांसारिक बंधनों को त्यागकर ब्रह्म में पूर्ण लीन हो जाती है। तब उसे इस संसार से मुक्ति एवं पूर्ण आनन्द अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। इस तरह जीव का परमात्मा से साक्षात्कार ही लखमी जी की दृष्टि में मोक्ष है। लेकिन यह इतना आसान नहीं। जीव को मुक्ति पाने हेतु अनेक त्याग करने पड़ते हैं। ईश्वर भक्ति एवं गऊ की सेवा से भी मुक्ति का द्वारा खुलता है। कवि ने लिखा भी है –

भक्ति करी जिसनै ईश्वर की वैं पार उतरग्ये सारे।
भले काम का मिलै नतीजा खुलज्यागे स्वर्ग द्वारे।
बुरे काम पै नीत राखते सदा कर्मो के हारे।
लाख चौरासी जिया–जून मैं फिरते मारे–मारे।
बाल्मीकि न्यूं भक्ति करग्ये पाप सभी धुलज्यांगे।।

हर उनके बेड़े पार करै जो गऊ चरण लहते है।।[2]

पं० लखमीचन्द ने मोक्ष प्राप्ति हेतु अनेक मार्ग सुझाये हैं। उनका साफ–साफ कहना है कि जब तक जीव संसार के भ्रम–जाल में उलझा रहेगा तब तक प्रभु को साक्षात्कार से वह वंचित ही रहेगा। जब जीव सांसारिकता से परे हो जाता है तो वह मोक्ष का अधिकार बन जाता है। सांगा 'मीराबाई' के माध्यम से कवि ने पग–पग पर मोक्ष का मार्ग बताते हुये इसे पाने हेतु भक्ति रूपी सरोवर में डूबकियों लगानी होंगी। तभी जीव की आत्मा परमात्मा का साक्षात्कार कर पायेगी। मीरा कहती भी है –

कर्म कर्या हुआ इस दुनिया मैं हरगिज नहीं टलैगा। पाप पुन्न कर्या इस माणस का हरदम साथ चलैगा। बिन सत्संग उपदेश धर्म बिन गल मैं झाड़ घलैगा। ज्ञान रूप की अग्नि बिन नहीं कर्म का ढेर जलैगा।

कवि की मान्यता है कि संसार स्वप्न मात्र है। उन्होंने 'ब्रह्म, सत्य, जगत मिथ्या' का सिद्धान्त इस प्रकार प्रकट किया है।

कल्पना करें तै पांचों तत्वों नै लाया फेरा
कल्पना तजे तै तेरा मन सुखधाम है।। 1।।
कल्पना से राजा बण्या नगरी तो रबड़ी है पास।
कल्पना से दूजे आगै चरण का तूं रहै दास।
कल्पना के रोम सांस घड मांस चाम सै।।[3]

इसके साथ–साथ जीव को प्रभु–प्रेम, गुरु कृपा, मनोविकारों का त्याग करना भी आवश्यक है। जब तक जीव में मनोविकारों का वास रहेगा तब तक उसे प्रभु की प्राप्ति नहीं हो सकती। इसके लिए जीव को गुरु की शरण में जाना होगा। गुरु ही जीव के अंधकार को मेटकर उसे प्रभु–प्राप्ति का मार्ग बतला सकता है। इसलिए जीव को गुरु सेवा में मन लगाना चाहिए। गुरु के बताये मार्ग पर ही चलना चाहिए। इसी ओर संकेत करते हुए पं० लखमीचन्द लिखते हैं –

मनुष्य जन्म मुश्किल तै
मिलता करोड़ों बन्द छूट कै।
गुरु का सत्संग करो प्रेम तै
ज्ञान की धार घूंट कै।। टेक।।
सतगुरु बाणी कहै प्रेम से
अक्षर–अक्षर गुणता।
बारा वर्ष तक विद्या पढ़ ले
दूध नीर जब छणता।
बारा वर्ष और कष्ट भोग कै
जब ब्रह्मचारी बणता।
पर निन्दा पर–धन पर–त्रिया
ये लेज्यां नहीं लूट कै।। 2।।[4]

अर्थात मानव को जन्म लेते है धर्मानुसार जीवन व्यतीत करना चाहिए। यहाँ लखमी ने गुरु, सत्संग, उपनयन, शिक्षा, ब्रह्मचर्य आदि के महत्व को आरेखित करने के साथ संदेश दिया है कि इनका पालन जीव को अनिवार्य समझकर करना चाहिए। पं० लखमीचन्द के सांगों के अध्ययन उपरान्त कहा जा सकता है कि उनका दर्शन से गहरा और आत्मीय सम्बन्ध है। यद्यपि उनका लक्ष्य दर्शन की शिक्षा देना नहीं था बल्कि इन्होंने अपने दर्शन द्वारा समाज को संभालने का कार्य किया है। पं० लखमीचन्द ने समाज और जीव की मुक्ति हेतु दर्शन की मशाल को जलाये रखा। इस मशाल के प्रकाश द्वारा उन्होंने समाज को विकृत होने से रोका। उन्होंने साधारण शब्दों द्वारा जन साधारण को मुक्ति का मार्ग बतलाया। लखमी जी की दृष्टि में संसार नश्वर है। जिसमें जीव फंसकर भटकता रहता है। मोक्ष प्राप्ति के लिए जीव को प्रयास करना चाहिए, लेकिन उसके इस प्रयास में काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह आदि टांग अड़ाते हैं। इनसे पार पाने हेतु कवि 'पूर्णमल' सांग में लिखता है –

''मात–पिता सुत दारा बन्धु झूठाए नाता लाया।
काम क्रोध मद लोभ मोह, पांचा ने शरीर सताया।
तीन ताप से बचू पिता ना चौरासी में जाऊँ।। 1।।
जितने गृहस्थी आराम करैं सै मैं सब तै बत्ती रहूंगा।
गुरु गोरखनाथ की कृपा तै मैं पूर्ण जाती रहूंगा।
दस इन्द्री सैं शरीर के अन्दर बण इनका पति रहूगा।''[5]

पं० लखमी जी वैदिक परम्परा को मानने वाले थे। जब उन्होंने तत्कालीन समाज को पापाचार में आकंठ डूबा देखा तो वे चुप नहीं रहे। उन्होंने धर्मविहीन नास्तिकों की जमकर भर्त्सना की है। कवि सर्वत्र अज्ञान और छल–कपट का बोलबाला देखकर कह उठे –

''समझ ना सकते जगत के
मन पै अज्ञान रूपी मल होग्या।
बेईमान मैं मग्न रहै सैं
गांठ–गांठ मैं छल होग्या।। टेक।।
भाई के धोरै मा जाया भाई
चाहता बैठणा पास नहीं।।
जै बीर न पति कया कै
ल्यादे तै पेट भरण की आस नहीं।
मात–पिता गुरु–शिष्य सुत
नै कहैं मेरे चरण का दास नहीं।
पढ़े–लिखे बिन मात–पिता
गुरु छोटे–बडे की काण नहीं।।
सतपथ गो पथ विधि भाग
बिन सब कर्तव्य निष्फल होग्या।।[6]

पं० लखमीचन्द ने अविज्ञात नाम के ईश्वर की भी चर्चा की है। यह अविज्ञात नामक ही उसे माया के बंधन से मुक्ति का मार्ग बताता है। इस अविज्ञात ब्रह्म की चर्चा वेदों में भी खूब की गई है। नारद ने इसकी व्याख्या भी की है। लखमी जी इसी तथ्य का विवेचन–विश्लेषण करते हुए लिखते हैं –

''दस इन्द्री एक मन पांच विषय
या पंचभूत की माया।
त्रिगुण झगड़ा सत रज तम
का पुरंजन संग दर्शाया।
जीव साथ अविज्ञात आत्मा
ब्रह्म स्वरूप कहलाया।
सत चित आनन्द बड़ा दयालु
चार वेद नै गाया।
कहै लखमीचन्द श्री नारद जी
नै न्यु ब्रह्म ज्ञान विचारै।।''[7]

अतः जीव को सांसारिकता का त्याग कर धर्म का मार्ग अपनाना चाहिए। विवेच्य कवि इसी तथ्य को रावण, गांधारी, सगर के माध्यम से विवेचित करते हुए लिखते हैं –

उस रावण नै भूल बीच मै,
लंका स्वर्ण की खोई।। 1।।
चित पै खोटी लई थी धारा,
जा दई लात ऋषि के मार।
सगर के मरग्ये साठ हजार,
रोया कुणबे का मोहई।। 2।।
क्यूं बोवै सै अगत सूल मैं,
फेर खश्बोई ना रहै फूल मैं।।
एक सौ एक बेटे मरे भूल
मैं पाछै गन्धारी रोई।। 3।।
गुरु मानसिंह पकड़ धर्म का धोरा,
दीखज्या स्वर्गपुरी का गोरा।
लखमीचन्द बणै सच्चा भौंरा,
पाप की तजकै खश्बोई।। 4।।[8]

जीव की आत्मा परमात्मा से मिल इसके लिए जीव को मोह–माया के दलदल से निकलना होगा। इसके लिए जीव को भगवत–भक्ति में लौ लगानी होगी ऐसा करने से ही जीवन के पाप कट सकते हैं। मोक्ष–प्राप्ति का यह एकमात्र रास्ता है। मनुष्य को इस मार्ग की ओर प्रवृत्त करने के लिए कवि कहते हैं कि –

करे बिन काम हुया देख्या ना,
भजै बिन राम हुया देख्या ना।
कोए लखमीचन्द नाम हुया ना,
रोग बिराणे की छांह मैं।।[9]

इसके साथ–साथ लखमीचन्द का अटूट विश्वास था कि गऊ ब्राह्मण और साधु लोगों की सेवा करने से भी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। सनातन धर्म को ही वे श्रेष्ठ मानते थे। उनकी मान्यता थी कि वेदों का विरोध करने वाला कभी मोक्ष का अधिकारी नहीं बन सकता। इसी मान्यता को पं० लखमीचन्द व्यक्त करते हुए लिखते हैं–

शूद्र सेवा कर्या करैं थे,
बणियां खेती क्यारी।
क्षत्री सबकी रक्षा करैं थे,
ब्राह्मण वेदाचारी।
कहै लखमीचन्द घणे फण्ड
चालग्ये अक्कल न्यारी–न्यारी।
धर्म सनातम भूल गए
फिरै दुनिया मारी–मारी।
गऊ ब्राह्मण सिद्ध
तीन बर्ण से पजे जाया करते।।[10]

पं० लखमी ने जीव को मोक्ष की तरफ अग्रसर करने हेतु विभिन्नि भक्तों का उदाहरण भी दिया है। सांग 'मीराबाई' तो पूरी तरह भक्ति पर आधारित कहा जा सकता है। इसी सांग में लखमी भक्ति की महिमा का बखान करते हुए सिद्ध करते हैं कि भक्ति ही वह शक्ति है जो जीव को परमात्मा से मिला सकती है। कवि लिखते हैं–

धुरु भक्त को बालेपण में,
दर्शन के दिए कोकला बन मैं।।
रटते रटते हरिभजन मैं
पास भी हो जाया करै।। 1।।
सच्चा कहण योहे सै जगत का,
ख्याल कुछ चाहिए अगम अगत का।
लगन करण तै भगवान भक्त का
खास भी हो ज्याया करै।। 2।।
मनुस्मृति का भेद बताएं तै,
मनैं कुछ जाण पाटी खबर बताएं तै।
बेटी बहू सताएं तै घर का
नाश भी हो ज्याया करै।। 3।।
लखमीचन्द भूल मत मद मैं,
रहणा पड़ै काल की हद मैं।।
ज्ञान के स्वरूप से मोक्ष के पद
मैं बास भी हो ज्याया करै।। 4।।[11]

इस तरह कवि ने जीव को प्रभु–भक्ति का संदेश दिया है। इसके साथ–साथ कवि ने ईश्वर–लीला का गुणगान करके भी जीव को भक्ति–मार्ग पर चलने का सुझाव दिया है। इसके लिए कवि ने विभिन्न भक्तों का संदर्भ भी दिया है। पीपा, सदन, धन्ना, सम्मन सेऊ आदि की मुक्ति भी प्रभु–भक्ति के कारण हुई थी। इसलिए जीव को हमेशा परमात्मा की शरण में रहना चाहिए। यही शरण जीव को सांसारिक बंधनों से छुटकारा दिला सकती है। प्रभु की शरण में जो भक्त गया उसका बेड़ा निश्चित रूप से पार होता है। इसलिए पं० लखमीचन्द ने पग–पग पर प्रभु–प्रेम करने का संदेश दिया है –

''हे ईश्वर तेरी अद्भुत माया
का कोन्यां भेद खुलता।
हे ईश्वर तेरी भजन बन्दगी
मैं हरगिज नहीं भूलता।
मुग्धा पड़ पड़ टोहऊँ पैड़ा नै
कित किस्मत पड़कै सोगी।। 2।।
पीपा भक्त और सम्मन सेऊ
तनै सब के कारज सारे।
नन्दा नाई सदन कसाई
प्रभु बड़े–बड़े पापी तारे।
धन्ना जाट सन्तों मैं मिलकै
रट हरि नाम पुकारे
कांकर बोदी मोती उपजे
सब के करै गुजारे।
दासी सुत से नारद कर
दिए कई जन्म के रोगी।। 3।।
मानसिंह सतगुरु जी की
सेवा लोटूं दास चरण मैं।।[12]

निष्कर्ष

यह संसार दुःखों का घर है। मनुष्य जन्म लेते ही इन दुःखों में घिर जाता है। लखमी के सांगों का विवेचन–विश्लेषण करने के उपरान्त यह कहा जा सकता है कि उन्होंने मोक्ष की विवेचना शास्त्रीय ढंग से नहीं की। उनका लक्ष्य भी यह नहीं रहा। उनका प्रमुख लक्ष्य तो पाप एवं माया से लिप्त मानवों को सन्मार्ग पर लाना था। उनकी मान्यता रही है कि जब जीव सांसारिकता से

विरक्त हो जाता है। तभी उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस तरह हम कह सकते हैं कि पंडित लखमीचन्द की मोक्ष विषयक दर्शन भी मानव केंद्रित कहा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 724*
2. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 766*
3. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 733*
4. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 741*
5. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 446–447*
6. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 410*
7. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 687*
8. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 741*
9. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 751*
10. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 718*
11. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 718*
12. *सं० पूर्णचन्द शर्मा, पं० लखमीचन्द ग्रन्थावली, पृ० 624*